अध्याय
16

यमराज की दिशा

चंद्रकांत देवताले

© NCERT not to be republished

कवि-परिचय

(i) नाम- चंद्रकांत देवताले

(ii) जन्म स्थान- मध्य प्रदेश

(iii) जन्म वर्ष- १९३६

(iv) जिला- बेतूल

(v) गांव- जौलखेड़ा

साहित्यिक-विशेषताएं- चंद्रकांत देवताले साठोत्तरी हिंदी कविता के प्रमुख कवि माने जाते हैं इन्होंने अपनी रचनाओं में गांव-कस्बा और निम्न मध्य वर्ग को स्थान दिया है और साथ ही साथ प्रशासन और व्यवस्था जैसे विषयों पर भी इन्होंने कलम चलाई है।

प्रमुख रचनाएं- लकड़बग्घा हंस रहा है, पत्थर की बैंच, दीवारों पर खून से, भूखंड तप रहा है आदि।

भाषा-शैली- भाषा सहज, सरल और प्रभावशाली है। तत्सम, उर्दू, फारसी आदि शब्दों का इन्होंने प्रयोग किया है।

पाठ-परिचय

हमारी पाठ्य-पुस्तक 'क्षितिज' के १६वें अध्याय में जो रचना पढ़ेंगे वह है यमराज की दिशा एवं इसके रचनाकार हैं देवताले जी। इस पाठ से संबंधित निम्नलिखित बिंदुएं इस प्रकार से है- १) कविता का शीर्षक है यमराज की दिशा जिसे भय का प्रतीक माना जाता है। भारतीय धार्मिक मान्यता के अनुसार ये दक्षिण के स्वामी है और हमारे कर्मों के अनुसार मृत्यु प्रदान करते है।

२) कविता के दो प्रमुख पात्र हैं १) कवि स्वयं एवं २) कवि की मां।

कवि की मां ने कवि को मृत्यु के देवता और उनकी दिशा से परिचित करवाया। वे अपने बच्चे की सुरक्षा को सुनिश्चित करना चाहती थी।

३) कवि की मां मृत्यु जैसे गूढ़ विषय को समझाने में असमर्थ थी। कवि की बाल सुलभ जिज्ञासा को शांत करने के लिए वे केवल इतना ही कह पायी कि- 'दक्षिण की तरफ करके पैर मत सोना'।

४) कवि ने मां की बात सदा मानी। उन्होंने कभी भी दक्षिण दिशा पैर पसार (करके) कर नहीं सोया, लेकिन आज उन्हें अपनी मां की मान्यता गलत जान पड़ती है। आज कवि को हर दिशा दक्षिण लगती है।

५) स्वार्थ से वशीभूत, धन की चाहत और राजनीतिक तुष्टीकरण ने दक्षिण दिशा के सारे समीकरण या मान्यता को तोड़ दिया है। आज व्यक्ति खासकर सीधा और साधारण व्यक्ति हर तरफ से असुरक्षित है। कब, कहां से उन्हें नर यम (दक्षिण पंथी विचारधारा) दबोच ले पता नहीं।

शीर्षक की सार्थकता- असंवेदनशीलता, असमानता और पूंजीवाद के खिलाफ में आवाज उठाना ही साठोत्तरी कवियों का मुख्य विषय रहा है। यहां शीर्षक के द्वारा दक्षिण दिशा की भारतीय मान्यता को प्रबल करना नहीं है बल्कि शीर्षक के माध्यम से दक्षिणपंथी विचारधारा का खंडन करना है जो असंवेदनशीलता, आसमानता और पूंजीवाद को बढ़ावा देते हैं। कवि इन्हें मानवता के लिए यमराज मानते हैं।

© JCERT not to be republished

कविता की व्याख्या

पद संख्या 1- माँ की ईश्वर से मुलाक़ात हुई या नहीं

कहना मुश्किल है

पर वह जताती थी जैसे

ईश्वर से उसकी बातचीत होती रहती है

और उससे प्राप्त सलाहों के अनुसार

ज़िंदगी जीने और दुख बर्दाश्त करने के

रास्ते ख़ोज लेती

शब्दार्थ- ईश्वर-भगवान। मुलाकात-भेंट। मुश्किल-कठिन। जताना-दिखाना। सलाह-सुझाव। बर्दाश्त-सहना।

प्रसंग-प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक

'क्षितिज' के अंतर्गत संकलित चंद्रकांत देवताले जी द्वारा रचित कविता 'यमराज की दिशा' से उद्धृत (लेना) है। कविता के अंश में कवि ने अपनी मां की ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास को दिखाया है

व्याख्या- मानव जीवन सुख और दुख दोनों से बंधा हुआ है। सुख को भोगना तो आसान है किंतु दुख को बर्दाश्त करना कठिन है। जीने के लिए दुख को बर्दाश्त करने की कला भी आना जरूरी है। कवि की मां इस कला को ईश्वर की सत्ता में विश्वास करके जीना सीख लिया था। सुख हो या दुख ईश्वर सदैव उनके साथ हैं ऐसा मानकर वे अपने आप को सुरक्षित मान लेती हैं।

विशेष-

1. भाषा सरल एवं प्रभावशाली है।

2. जिंदगी जीने में अनुप्रास अलंकार है।

3. मुलाकात, जिंदगी बर्दाश्त जैसे उर्दू-फारसी शब्दों का प्रयोग किया गया है।

4. कवि की मां जीवन को सहजता में लेती हैं।

5. प्रया: भारतीय नारी की तरह कवि की मां का भी ईश्वर पर अटूट (ना टूटने वाला) आस्था (विश्वास) है।

पद संख्या २) -माँ ने एक बार मुझसे कहा था

दक्षिम की तरफ़ पैर करके मत सोना

वह मृत्यु की दिशा है

और यमराज को क्रुद्ध करना

बुद्धिमानी की बात नहीं

शब्दार्थ- तरफ-ओर। कोद्ध-नाराज, गुस्सा। बुद्धिमानी-समझदारी।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'क्षितिज' के अंतर्गत संकलित चंद्रकांत देवताले द्वारा रचित कविता 'यमराज की दिशा' से उद्धृत है। कविता के इस अंश में कवि अपनी मां के द्वारा दक्षिण दिशा को लेकर चेताए गए शब्दों को याद करते है।

व्याख्या- इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहते हैं की उनकी मां की आस्था इस बात को लेकर प्रबल (जोर देना, विशेष) थी, की दक्षिण दिशा में पैर करके नहीं सोना चाहिए क्योंकि दक्षिण दिशा यम की दिशा है और

© JCERT not to be republished

हमारा दक्षिण दिशा में पैर करना उन्हें नाराज करने जैसा होगा। कवि की मां इस चेतावनी के द्वारा अपने बच्चे की सुरक्षा सुनिश्चित करना चाहती है। दूसरे शब्दों में कवि दक्षिणपंथी विचारधारा से दूरी बनाए रखेंने की बात करना चाहते हैं।

विशेष-

1. मां के द्वारा धार्मिक आस्था को बल दिया गया है।

2. छंद मुक्तक काव्य है।

3. कवि अपनी मां की बात को स्मृति के द्वारा याद करते हैं।

4. मृत्यु, क्रोध जैसे संस्कृत के शब्दों का प्रयोग किया।

5. कवि ने खड़ी बोली का सुंदर प्रयोग किया है।

पद संख्या ३- तब मैं छोटा था

और मैंने यमराज के घर का पता पूछा था

उसने बताया था

तुम जहाँ भी हो वहाँ से हमेशा दूर दक्षिण में

शब्दार्थ- हमेशा-सदैव, हरदम। यमराज- भारतीय मान्यता अनुसार मृत्यु के देवता।

प्रसंग- पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' के अंतर्गत संकलित चंद्रकांत देवताले द्वारा रचित कविता 'यमराज की दिशा' से उद्धृत है कविता के इस अंश में कवि ने यम और दक्षिण दिशा को लेकर उत्पन्न अपनी जिज्ञासा के बारे में बताया है।

व्याख्या- मां की चेतावनी की दक्षिण दिशा की तरफ पैर करके मत सोना वह मृत्यु की दिशा है, कवि के बाल-सुलभ मन में जिज्ञासा उत्पन्न करती है। एक खोजी बालक की भांति वे यम का घर ढूंढना चाहते है। मां ने यमराज का घर का पता धार्मिक मान्यता के अनुसार उन्हें दक्षिण बता दिया। दूसरे भाव में कवि कहना चाहते है कि दक्षिणपंथी विचारधारा के लोग किसी यमराज से कम नहीं है, इनके विचार धारा मानवीय संवेदना से भिन्न है।

विशेष-

१) खड़ी बोली का प्रयोग किया है।

२) भारतीय परंपरा में दक्षिण दिशा का विशेष महत्व दिया गया है।

३) यहां हम एक बच्चे का खोजी और जिज्ञासा भरी मन को देख पाते है।

४) सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है।

पदसंख्या 4- माँ की समझाइश के बाद

दक्षिण दिशा में पैर करके मैं कभी नहीं सोया

और इससे इतना फ़ायदा ज़रूर हुआ

दक्षिण दिशा पहचानने में

मुझे कभी मुश्किल का सामना नहीं करना पड़ा

शब्दार्थ- समझाइश-समझाना। फ़ायदा- लाभ। मुश्किल-कठिनाई।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' के अंतर्गत संकलित चंद्रकांत

© JCERT not to be republished

देवताले द्वारा रचित कविता 'यमराज की दिशा' से उद्धृत है। कविता के इस अंश में कवि दक्षिण दिशा का महत्व अपने और अपनी मां के लिए जीवन में क्या है बताते है।

व्याख्या- कवि कहते हैं कि उनकी मां एक धार्मिक विचारों वाली महिला थी, जिनके लिए दक्षिण दिशा का विशेष महत्व था। वे अपने बच्चे को अपशगुन से बचाने के लिए दिशा-बोध कराती है किंतु कवि इसे भय का दिशा नहीं मानकर मात्र दिशा-ज्ञान का एक स्रोत (तरीक) मानते है। दूसरे भाव से देखा जाए तो कवि ने कभी भी दक्षिण पंथी विचारधारा को अपने जीवन में नहीं अपनाया।

विशेष- १) भारतीय समाज में दक्षिण दिशा का विशेष महत्व है।

फ़ायदा, मुश्किल जैसे बोल चाल और विदेशी शब्दों का प्रयोग किया गया है।

दक्षिण दिशा में अनुप्रास अलंकार है।

'समझाइश' जैसे शब्द का प्रयोग करके कवि ने पद में रोचकता बढ़ा दी है।

भाषा सरल सहज है।

पद संख्या पांच -

और मुझे हमेशा माँ याद आई

दक्षिण को लाँघ लेना संभव नहीं था

होता छोर तक पहुँच पाना

तो यमराज का घर देख लेता

शब्दार्थ- लांघ-उछल कर पार करना। संभव- करने योग्य, वश की बात छोर-किनारा, अन्त।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'क्षितिज' के अंतर्गत संकलित चंद्रकांत देवताले जी द्वारा रचित कविता 'यमराज की दिशा' से उद्धृत है। कविता के इस अंश में कवि ने दक्षिण दिशा के रहस्य को समझने में अपनी असमर्थता को व्यक्त (बताना) किया है।

व्याख्या- बाल अवस्था में मां से पूछे गए प्रश्नों का उत्तर। कवि वर्तमान में भी ढूंढ रहे है। कवि कहते है कि अगर दक्षिण में यमराज का घर है तो दक्षिण की ओर कई बार दूर तक जाने के बाद भी वे यमराज का घर ढूंढ क्यों नहीं पाए। कवि स्वीकार करते हैं कि मृत्यु को समझना आसान नहीं है।

विशेष-

१) भाषा सहज, सरल है।

२) पद में कई भाषाओं के शब्दों का मिश्रण (प्रयोग) है।

३) दूर-दूर में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

४) कवि का मन जिज्ञास से भरा हुआ है।

५) संभव, लांघना जैसे संस्कृत शब्द का प्रयोग किया गया है।

पद संख्या छह-पर आज जिधर भी पैर करके सोओ

वहीं दक्षिण दिशा हो जाती है

सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल हैं

© JCERT not to be republished

और वे सभी में एक साथ

अपनी दहकती आँखों सहित विराजते हैं

शब्दार्थ- आलीशान-भव्य, दहकती-जलता हुआ, जिधर-जिस ओर। विराजना उपस्थित, विद्यमान, मौजूद।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक' क्षितिज' के अंतर्गत संकलित चंद्रकांत देव ताले जी द्वारा रचित कविता 'यमराज की दिशा' से उद्धृत है। कविता के इस अंश में कवि ने चारों तरफ फैले अवशगुन (भय, चिंता, असुरक्षा की भावना) पर चिंता व्यक्त की है।

व्याख्या- स्वार्थ से वशीभूत, धन की चाहत और राजनीतिक तुष्टीकरण ने दक्षिण दिशा के सारे समीकरण या मान्यता को तोड़ दिया है। आज व्यक्ति खासकर सीधा और साधारण व्यक्ति हर तरफ से असुरक्षित है। कब, कहां से उन्हें नर यम (दक्षिणपंथी विचारधारा के लोग) दबोच ले पता नहीं।

विशेष-

१) भाषा सहज और प्रभावशाली है।

२) दक्षिण दिशा में अनुप्रास अलंकार है।

३) दहकती आंखों जैसे शब्दों का प्रयोग करके कवि ने भय के माहौल (वातावरण) को दिखाना चाहा है।

४) छंद मुक्त काव्य है।

५) कवि ने वर्तमान हालात (स्थिति) पर अपनी चिंता व्यक्त की है।

पद संख्या सात-माँ अब नहीं है

और यमराज की दिशा भी वह नहीं रही

जो माँ जानती थी।

शब्दार्थ- यमराज-दक्षिण दिशा का स्वामी, मृत्यु का देवता।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक क्षितिज के अंतर्गत संकलित चंद्रकांत देवताले द्वारा रचित कविता यमराज की दिशा से उद्धृत है कविता के इस अंश में देख पाते हैं कि मृत्यु की धारणा वर्तमान स्थिति में बदल गई है।

व्याख्या- दक्षिण की दिशा मृत्यु की दिशा है एसी कवि की मां की मान्यता थी, किन्तु वर्तमान में चारों तरफ आरजकता का वातवरण है। ऐसे में नर यम (दक्षिण पंथी विचारधारा) किस दिशा से आ जाए किसी को ज्ञात (पता) नहीं।

विशेष-

१) भाषा सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली है।

२) वर्तमान में मृत्यु की धारणा बदल गई है।

३) छंद मुक्त कविता है।

४) कवि अपनी मां को स्मरण (याद) करते है।

५) यहां मृत्यु के भय को प्रदर्शित किया गया है।

© JCERT not to be republished

बहु वैकल्पिक प्रश्न

१. 'यमराज की दिशा' के रचनाकार का नाम लिखें?

क) जयशंकर प्रसाद

ख) प्रेमचंद

ग) चंद्रकांत देवताले

घ) यशपाल

उत्तर-ग) चंद्रकांत देवताले।

२. हमारे पाठ्यपुस्तक क्षितिज के अंतर्गत देवताले जी द्वारा रचित किस रचना को लिया गया है?

क) लकड़बग्घे हंस रहा हैं

ख) पत्थर की बैंच

ग) भूखंड तप रहा है

घ) यमराज की दिशा

उत्तर-घ) यमराज की दिशा

३. चंद्रकांत देवताले जी हिंदी काव्य के किस परंपरा के माने जाते हैं?

क) प्रतिवादी धारा

ख) साठोत्तरी हिंदी काव्य परंपरा

ग) छायावाद युगीन

घ) उत्तर छायावाद युग

उत्तर-ख) साठोत्तरी हिंदी काव्य परंपरा।

४. साठोत्तरी हिंदी काव्य परंपरा कब से आरंभ (शुरू) मानी जाती है?

क) १९४०

ख) १९३५

ग) १९६०

घ) १९४५

उत्तर-ग) १९६० के बाद।

५. क्या लेखक दक्षिणपंथी विचारधारा से प्रभावित थे?

क) हां

ख) पता नहीं

ग) शायद हां

घ) नहीं

उत्तर-घ) नहीं

टिप्पणी- नहीं, लेखक इस विचारधारा के सख्त (कड़ा) खिलाफ में थे।

६. कवि ने पूंजीवाद को किस का प्रतीक (रूप) माना है?

क) मित्र का

ख) हितैषी का

ग) समाज सुधारक का

घ) यमराज का

उत्तर -घ) यमराज का

© JCERT not to be republished

७ कवि की मां किस प्रवृत्ति(स्वभाव) की थी?

क) घुमक्कड़ प्रवृत्ति की महिला

ख) बातूनी प्रवृत्ति की महिला

ग) धार्मिक प्रवृत्ति की महिला

घ) अंहकारी प्रवृत्ति की महिला

उत्तर-ग) धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी

८. कवि की मां की आस्था (भरोसा) किस पर अटूट थी?

क) समाज पर

ख) देश पर

ग) ईश्वर पर

घ) अपने पुत्र पर

उत्तर-ग) ईश्वर पर

९. भारतीय मान्यता के अनुसार मृत्यु के देवता किसे माना गया है?

क) कुबेर जी को

ख) वरुण देव को

ग) यमराज को

घ) अग्नि देव को

उत्तर-ग) यमराज को।

१०. कवि की मां कवि को किस तरफ पैर करके सोने से मना करती है?

क) उत्तर दिशा की ओर

ख) पूरब दिशा की ओर

ग) दक्षिण दिशा की ओर।

घ) पश्चिम दिशा की ओर

उत्तर-ग) दक्षिण दिशा की ओर।

११. कवि की मां जिंदगी जीने और दुख बर्दाश्त करने के रास्ते किस प्रकार से खोज लेती है?

क) संबंधियों में आस्था रखकर

ख) ईश्वर में आस्था (विश्वास)रखकर

ग) समाज में आस्था रखकर

घ) देश में आस्था रखकर

उत्तर-ख) ईश्वर में आस्था (विश्वास)रखकर

१२. जिंदगी जीने में कौन सा अलंकार है?

क) उत्प्रेक्षा अलंकार

ख) अनुप्रास अलंकार।

ग) रूपक अलंकार

घ) अतिशयोक्ति अलंकार

उत्तर-ख) अनुप्रास अलंकार

१३. दक्षिण की तरफ पैर करके सोने पर कौन कुब्द्ध (नाराज) हो जाएगा?

क) कुबेर देव

ख) वरुण देव

ग) यमराज

घ) अग्नि देव

उत्तर-ग) यमराज

© JCERT not to be republished

१४. दक्षिण दिशा में कौन सा अलंकार है?

क) उत्प्रेक्षा अलंकार।

ख) अनुप्रास अलंकार।

ग) रूपक अलंकार।

घ) अतिशयोक्ति अलंकार।

उत्तर-ख) अनुप्रास अलंकार।

१५. दक्षिण दिशा की पहचान लेखक को किसके द्वारा हुई?

क) अपने मित्रों द्वारा

ख) अपने पिता द्वारा

ग) अपने गुरु द्वारा

घ) अपनी मां के द्वारा।

उत्तर-ग) अपने मां के द्वार

१६. दूर- दूर में कौन सा अलंकार है?

क) उत्प्रेक्षा अलंकार।

ख) अनुप्रास अलंकार।

ग) रूपक अलंकार।

घ) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

उत्तर-घ) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

१७. लांघ लेना का अर्थ बताएं?

क) दौड़ लगाना

ख) दौड़ कर पार कर लेना

ग) उछलकर पार कर लेना।

घ) कूदकर पार कर लेना

उत्तर-घ) उछलकर पार कर लेना।

१८. संभव शब्द का अर्थ बताएं?

क) नहीं करने लायक

ख) असंभव

ग) कठिन

घ) करने योग्य या वश की बात।

उत्तर-घ) करने योग्य या वश की बात।

१९. छोर का अर्थ बताएं?

क) बीच ख) बगल

ग) किनारा घ) ऊपर

उत्तर-ग) किनारा

२०. बचपन में कवि के मन में क्या जिज्ञासा उत्पन्न हुई?

क) दोस्त के घर देखने की इच्छा

ख) विदेश देखने की इच्छा

ग) परदेश देखने की इच्छा

घ) यमराज के घर को देखने की इच्छा

उत्तर-घ) यमराज के घर को देखने की इच्छा

२१. कवि यमराज के घर का पता किससे पूछते है?

क) अपने मित्रों से।

ख) अपने पिता से।

ग) अपने गुरु से।

घ) अपनी मां से।

उत्तर-घ) अपनी मां से।

© JCERT not to be republished

लघु उत्तरीय प्रश्न

१) चंद्रकांत देवताले जी हिंदी काव्य के किस परंपरा के माने जाते है?

उत्तर- साठोत्तरी हिंदी काव्य परंपरा।

१) साठोत्तरी हिंदी काव्य के अन्य रचनाकारों के नाम लिखें?

उत्तर- विष्णु खरे, अज्ञेय, मुक्तिबोध, नागार्जुन, श्रीकांत वर्मा, आलोक धन्वा, दूधनाथ सिंह आदि।

२) साठोत्तरी हिंदी काव्य परंपरा के कवियों की क्या विशेषताएं थी?

उत्तर- इस परंपरा के कवि प्राया: विरोधी स्वभाव के थे। सामाजिक अवस्था और पूंजीवाद के खिलाफ में इन्होंने अपनी कलम चलाई।

३) यमराज की दिशा किस प्रकार की रचना है?

उत्तर- प्रतीकात्मक शैली की रचना है।

४) प्रतीकात्मक का अर्थ का अर्थ बताएं?

उत्तर- जिसमें प्रतीकों (चिन्हों) की सहायता से विषयों का बोध कराया जाता हो जैसे यमराज की दिशा में दक्षिण दिशा पूंजीवाद या पूंजीपतियों को दर्शाता है।

५) दक्षिण की दिशा को लेकर कवि और उनकी मां की सोच में क्या अंतर था?

उत्तर- कवि की मां एक धार्मिक महिला थी उनके लिए दक्षिण का दिशा यम की दिशा थी, लेकिन कवि के लिए यह दिशा पूंजी पतियों की थी।

६) दक्षिणपंथी विचारधारा का क्या अर्थ है?

उत्तर- यह एक ऐसी विचारधारा है जो सामाजिक असमानता और पूंजीवाद को समर्थन (प्रदान) करती है।

७) क्या लेखक दक्षिणपंथी विचारधारा से प्रभावित थे?

उत्तर- नहीं, लेखक इस विचारधारा के सख्त (कड़ा) खिलाफ में थे।

८) सभी दिशाओं में यमराज का आलीशान महल है का तात्पर्य (मतलब) बताएं?

उत्तर- इसका तात्पर्य यह है कि पूंजीवाद चारों ओर फैल रही है और इस व्यवस्था से साधारण जनता प्रभावित हो रही है।

९) कवि की मां किस प्रवृत्ति (स्वभाव) की थी?

उत्तर- धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी।

१०) कवि की मां की मान्यता दक्षिण दिशा को लेकर क्या थी?

उत्तर- दक्षिण दिशा यमराज का घर हैऔर दक्षिण में पैर करके नहीं सोना चाहिए।

११) कवि की मां जिंदगी जीने और दुख बर्दाश्त करने के रास्ते किस प्रकार से खोज लेती है?

उत्तर- ईश्वर में आस्था (विश्वास) रखकर।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

१२) दक्षिण दिशा की पहचान लेखक को किसके द्वारा हुई?

उत्तर- अपनी मां के द्वारा।

१३) दक्षिण दिशा को पहचान में कवि की मां ने किस प्रकार से सहायता की?

उत्तर- दक्षिण दिशा की ओर पैर करके नहीं सोने की सख्त मनाही (मना करना) मां ने कवि को दी थी, जिससे कवि दक्षिण दिशा को पहचानने लगे।

१४) दूर-दूर में कौन सा अलंकार है?

उत्तर- पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

१५) लांघ लेना का अर्थ बताएं?

उत्तर- उछलकर पार कर लेना।

१६) संभव शब्द का अर्थ बताएं?

उत्तर- करने योग्य या वश की बात।

१७) बचपन में कवि के मन में क्या जिज्ञासा उत्पन्न हुई?

उत्तर- यमराज के घर को देखने की इच्छा कवि के मन में उत्पन्न हुई।

१८) आज जिधर भी पैर करके सोओ वही दक्षिण दिशा हो जाती है ऐसा कवि को क्यों लगता है?

उत्तर- क्योंकि आज हर तरफ अनचाही मृत्यु का साम्राज्य है।

१९) सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल हैं का अर्थ बताएं ?

उत्तर- अनाचारी और पूंजीवादी लोगों से हर दिशा भर गया है, सीधे-साधे लोगों पर ये वर्ग अत्याचार करते हैं।

२०) 'दहकती आंखों सहित विराजते' हैं का अर्थ बताएं?

उत्तर- इस कथन का तात्पर्य यह है की अत्याचारी लोग साधारण लोगो के बीच में भय का माहौल तैयार करते हैं, जिससे उनका वर्चस्व (दबदबा) बना रहे।

२१) 'अब मां नहीं है और यमराज की दिशा भी वह नहीं रही जो मां जानती थी' का अर्थ बताएं?

उत्तर- ??

२२) मां के अनुसार मृत्यु की दिशा दक्षिण थी। हमारे भारतीय परंपरा के अनुसार कर्मों के आधर पर हमे मृत्यु प्रप्त होती है लेकिन वर्तमान में ये परिभाषा बदल गई है। आज मृत्यु का कारण कर्म नहीं बल्कि दूसरे लोगों का स्वार्थ है जिसके कारण आज मृत्यु की दिशा परिवर्तित (बदल) हो गई है।

उत्तर- ??

२३) 'आज जिधर भी पैर करके सोओ वही दक्षिण दिशा हो जाती है' यह पंक्ति किस पाठ से ली गई है इसके रचनाकार का नाम बताएं?

उत्तर- पाठ यमराज की दिशा एवं रचनाकार चंद्रकांत देवताले।

© JCERT not to be republished

२४) 'जिंदगी जीने और दुख बर्दाश्त करने के रास्ते खोज लेती है' यह पंक्ति किस पाठ से ली गई है इसके रचनाकार का नाम बताएं?

उत्तर- पाठ यमराज की दिशा एवं रचनाकार चंद्रकांत देवताले हैं।

२५) 'मां ने एक बार मुझसे कहा था दक्षिण की तरफ पैर करके मत सोना' यह पंक्ति किस पाठ से ली गई है एवं इसके रचनाकार का नाम बताएं?

उत्तर- पाठ यमराज की दिशा एवं रचनाकार चंद्रकांत देवताले हैं।

२६) 'तब मैं छोटा था और मैंने यमराज के घर का पता पूछा था' यह पंक्ति किस पाठ से ली गई है एवं इसके रचनाकार का नाम बताएं?

उत्त- पाठ यमराज की दिशा एवं रचनाकार चंद्रकांत देवताले जी है।

२७) 'दक्षिण दिशा पहचानने में मुझे कभी मुश्किल का सामना नहीं करना पड़ा' किस पाठ ली गई है के रचनाकार का नाम बताएं?

उत्तर- पाठ यमराज की दिशा एवं रचनाकार चंद्रकांत देवताले।

२८) 'सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल है' पंक्ति किस पाठ से ली गई है एवं इसके रचनाकार का नाम बताएं?

उत्तर- पाठ यमराज की दिशा एवं रचनाकार चंद्रकांत देवताले।

प्रश्न-अभ्यास

१) कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल क्यों नहीं हुई?

उत्तर- मांके द्वारा दक्षिण दिशा में पैर करके सोने की सख्त हिदायत ने कवि को दक्षिण दिशा की पहचान करवाने में सहायता की।

२) कवि ने ऐसा क्यों कहा की दक्षिण को लांघ लेना संभव नहीं था?

उत्तर- मृत्यु जैसे गूढ़ (गहरा) विषय को समझना आसान नहीं है इसलिए कवि को ऐसा लगता है।

३) कवि के अनुसार आज हर दिशा दक्षिण दिशा क्यों हो गई?

उत्तर- इसके निम्नलिखित कारण हो सकते है-

१) बढ़ाता पूंजीवाद

२) धार्मिक असहिष्णुता

३) धनबल का बढ़ना

४) सामाजिक अस्थिरता

५) बहु संख्यक वाद की धारणा

४) भाव स्पष्ट कीजिए-

सभी दिशाओं में यमराज का आलीशान महल है और वे सभी एक साथ अपने दहकती आंखों सहित विराजते हैं।

उत्तर- स्वार्थ से वशीभूत, धन की चाहत और राजनीतिक तुष्टीकरण (संतुष्ट करना) ने दक्षिण दिशा के सारे समीकरण या मान्यता को तोड़ दिया है। आज व्यक्ति खसकर सीधा

© JCERT not to be republished

और साधारण व्यक्ति हर तरफ से असुरक्षित है। कब, कहां से उन्हें नर यम दबोच ले पता नहीं।

कुछ रोचक जानकारी-

दक्षिण दिशा में पैर करके नहीं सोना चाहिए क्योंकि इसके कुछ वैज्ञानिक कारण है- पृथ्वी में चुंबकीय शक्ति होती है जिस की धारा दक्षिण से उत्तर की ओर चलती है ऐसे में सिर को दक्षिण दिशा में रखकर सोने से अधिक ऊर्जा प्राप्त करते है जो स्वस्थ के लिए अच्छा होता है।

पाठ में आयें कुछ विदेशी शब्द और उनकी उत्पत्ति-

संस्कृत के शब्द- ईश्वर, मृत्यु कुद्ध, संभव, लांघ

बोले जाने वाले स्थान- भारत

उर्दू के शब्द- मुलकात,

बोले जाने वाले स्थान- पाकिस्तान, भारत

फारसी के शब्द- जन्दगी, बरदाश्त

बोले जाने वाले स्थान- (फारस देश की भाषा) ईरान इराक, ताजिकिस्तान आदि देश।

अरबी के शब्द- मुश्किल, मुलकात

बोले जाने वाले स्थान - (अरब देश की भाषा) अफगानिस्तान।

© JCERT not to be republished